RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-01
January -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

गया जिला का जनसंख्या एवं पर्यावरण का प्रभाव

डॉ0 अजय कुमार

सहायक शिक्षक

जनसंख्या व्रद्वि एवं पर्यावरण की समस्या मानव के लिये सबसे प्रमुख भौगोलिक कारक है। यह भौगोलिक अध्ययन का सबसे महत्त्वपूर्ण केन्द्रीय बिन्दु भी है क्योंकि यह अपने प्राकृतिक पर्यावरण में अपी तकनीकी तथा श्रम द्वारा द्रष्यावली का रूप परिवर्त्तन कर देता है ।

मनुष्य के लगातार तकनीकी विकास से अनेक पर्यावरणीय समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं । अतः पर्यावरण व जनसंख्या के पहलुओं का अध्ययन आवश्यक है ।

मनुष्य भैगोलिक अध्ययन का सबसे महत्त्वपूर्ण केन्द्रीय बिन्दु माना जाता है क्योंकि यह अपने प्राकृतिक वातावरण में अपनी तकनीकी तथा श्रम द्वारा उस दृश्यवावली का रूप परिवर्तित कर देती है । मनुष्य के निरंतर तकनीकी विकास से अनेक पर्यावरणीय समस्यायें पैदा हो रही है । अतः पर्यावरण व जनसंष्ख्या के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन आवश्यक है ।

भारत जनसंख्या की दृष्टि से चीन के बाद विश्व में दूसरा स्थान है। हमारे देश में विश्व के कुल क्षेत्रफल का लगभग 2.5 प्रतिशत है जबकि सम्पूर्ण विश्व की कुल जनसंख्या का 16 प्रतिशत भारत में निवास कर रही है । देश की जनसंख्या का प्रभाव पड रहा है। बल्कि मानव की बढती हुई गतिविधियों से स्थानीय पर्यावरण पर भी प्रभाव पड रहा है।

नगरीकरण एवं पर्यावरण अवनयन

नगरीय केन्द्रों में जनसंख्या के लगातार बढती सान्द्रण एवं औघोगीकरण के कारण विकसित तथा विकासशील देशों में पर्यावरण प्रदूषण तथा अध्ययन की कई समसयाऐं हो गयी हैं।

नगरीकरण में व्रद्वि के कारण धरातलीय सतह के जल एवं भूमिगत जल का बजट भी प्रभावित होता है। नगरीय क्षेत्रों के विस्तार के कारण उसके पास की सरिताओं में बाढ की आव्रति तथा विस्तार में व्रद्वि हो जाती है क्योंकि पक्की सतह में व्रद्वि होने से वर्षा के जल का भूमि में रिसाव तथा अन्तः संचरण न होने के कारण धरातलीय वाहीजल व्रद्वि हो जाती है। जिससे वर्षा का अधिकांश जल बहकर शीध्र ही पास की सरिताओं में पहुँच जाता है ।

नगरों के केन्द्रों में उष्मा द्वीप तथा के ऊपर प्रदूषण गुम्बद के निर्माण के कारण एवं क्षेत्रीय विकिरण एवं सुलभ कराने के लिए भूमिगत जल का अधिकाधिक विदोहन किया जाता है। परिणामस्वरूप धरातलीय सतह के नीचे बडी कोटर बन जाती है। इस कारण कभी कभी धरातलीय सतह में धसांव हो जाता है ।

नगरों में प्रतिदिन त्यजित ठोस अवशेष पदार्थों तथा कूडा–कचरे से भी कई पर्यावरणीय समस्यायें उत्पन्न होती है । विकसित दशों के महानगरों में नगरीय अपशिष्ट पदार्थों के संचयन भडारन परिवहन शोधन तथा समुचित निपटान के प्रति अधिकाधिक ध्यान दिया जाता है लेकिन विकसित देश हमारे देश में भी नगरों में नगरीय अपशिष्ट पदार्थों के निपटान की समस्या का सामाधान नहीं हो पता है। नगरी जनसंख्या की व्रद्वि के साथ ही नगरीय अपशिष्ट की मात्रा में भी तेजी से व्रद्वि होती है नागपुर स्थित मुम्बई में प्रति व्यक्ति नगरों मे यह मात्रा 0 नगरी जनसंख्या की व्रद्वि के साथ ही नगरीय अपशिष्ट की मात्रा में भी तेजी से व्रद्वि होती है नागपुर स्थित मुम्बई में प्रति व्यक्ति नगरों मे यह मात्रा 0′15 से 0′35 किलोग्राम प्रति व्यक्ति प्रतिदिन होता है । नगरों के विभिन्न केन्द्रो में षहर का कचरा कई दिनों तक सडता रहता है जिससे दुर्गंध निकलती रहती है । इस सडते कचरे के ढेरों से जहरीली गैसे निकलती रहती हैं जिससे वायु प्रदूशित होता रहता है ।

जनसंख्या व्रद्वि से न केवल समाजिक समस्यायें उत्पन्न हो रही है बल्कि अनेक पर्यावरणीय समस्यायें भी पैदा हो रही है । जनसंख्या व्रद्वि हो रही है जिससे पथ्वी के सीमीत संसाघनो पर विशेष रूप से भूमि वायु तथा पानी पर अत्यधिक दबाव पड रहा है । ये तीनों तत्व जहाँ मनुष्य के लिये अत्यावश्यक है वहीं मानव के भोगवादी किया–कलापों के कारण वे तीनों तत्व अत्यधिक प्रदुषित हो रहे हैं । मानव चाहे कितनी ही वैज्ञानिक प्रगति कर लें लेकिन प्रथ्वी पर नई भूमि नया पानी तथा नई वायु जोडने की उसकी समर्थ नहीं है ।

जनसंख्या वृद्वी से हानियाँः–

तेजी से बढती हुई जनसंख्या का पर्यावरण के विभिन्न तत्त्वों पर निम्न रूप से प्रभाव पड रहा हैः–

1 जनसंख्या तथा खाध सामग्री में असन्तुलनः–

हमारे देश/ राज्य में तेजी से बढती हुई जनसंख्या के कारणा खाधान संकट पैदा हो रहा है । यधपि आजादी के बाद हमारे देश में खाधान का उत्पादन तीन गुना अधिक बढा है पर जनसंख्या में प्रप्ति से पूर्व यह स्थिति और भी अधिक गंभी थी प्रो0 ज्ञान चन्द्र के अनुसार 1901 से 1934 के मध्य जहाँ भारत जनसंख्या में 21 प्रतिशत की व्रद्वि की संभावना समाप्त हो चुकी है । जनसंख्या में व्रद्वि के कारण जीवन स्तर को सुघारने के बजाय वर्त्मान जीवन स्तर को बनाये रखना भी कठिन हो गया है ।

2 प्राकृतिक संसाधनो तथा जनसंख्या में असन्तुलन

तेजी से बढती हुई जनसंख्या का दबाव हमारे देश के प्राकृतिक संसाधनों पर भी अत्यधिक प्रभाव डाल रहा है। बढती हुई जनसंख्या के भारण–पोश्ण के लिये प्राकृतिक संसाधनों के वाणिज्यिक महत्त्व को अधिक आंका जा रहा है जबकि इनके पर्यावरणीय महत्त्व की उपेक्षा की जा रही है । वन वन्य जीव –जन्तू खनिज तथा मछलियों का बडे पैमाने पर विनाष किया जा रहा है। प्राकृतिक संसाधनों तथा जनसंख्या

RRIJM 2015, All Rights Reserved

के मध्य सन्तुलन विगङने से अनेक पर्यावणीय समस्यायें जैसे– प्रदूषण भू–क्षंरण बाढ सूखा तथा महामारियाँ आदि विपत्तियाँ पैदा हो रही है । संसाधनों की भारण–पोशण क्षमता कम होने के कारण एक प्रदेश से दूसरे प्रदेशों में जनसंख्या का बङे पैमाने पर पलायन हो रहा है। देश के जिन भागों में खनिज संसाधन जैसे– कोयला लौह अयस्क व मैगनीज का अधिक उत्पादन हो रहा है ऐसे क्षेत्रों में जनसंख्या का अधिक आकर्षण हो रहा है। इन क्षेत्रों में जनसंख्या का अधिक आकर्षण हो रहा है। इन क्षेत्रों में जनसंख्या का अधिक जमाव से खनिज संसाधनो तथा जनसंख्या के बीच सन्तुलन बिगङ रहा है।

3 नगरीय समस्यायें तथा जनसंख्या व्रद्विः–

तीव्र जनसंख्या व्रद्वि तथा ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय –ग्रमीण क्षेत्रों में जनसंख्या में स्थानान्तरण के कारण देश / राज्य के नगरीय क्षेत्रों में विषेश रूप से बङे शहरों में जनसंख्या का दबाव अत्यधिक बढ रहा है । नगरीकरण के कारण भूमि की कीमतें अत्यधिक बढ रही हो गई हैं। भूमि महँगी होने के कारण नगरीय क्षेत्रों में आवासीय समस्यायें पैदा हो गई हैं। आवासीय समस्या के कारण नगरीय क्षेत्रों में झोपडी–पट्टियों का विकास हो रहा है। इससे नगरीय क्षेत्रों में गन्दगी बढने के साथ कूङा–करकट के एकत्रीकरण की समस्या भी बढी । जनसंख्या व्रद्वि से नगरीय क्षेत्रो में गन्दगी बढने के साथ–साथ कूङा –करकट के एकत्रीकरण की समस्या भी बढी । जनसंख्या के असीमित विकास से नगरीय पर्यावरण प्रदूशित हो रहा है । प्रकार नगरीय जनसंख्या के असीमित विकास से नगरीय पर्यावरण प्रदूशित हो रहा है ।

4 गरीबी एवं बेरोजगारी की समस्याः–

जनसंख्या व्रद्वि के कारण देश /राज्य में गरीबी और बेरोजगारी की समस्याएँ उत्पन्न हो रही है । इससे देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था लङखङा रही है। जनसंख्या व्रद्वि के कारण ग्रमीण क्षेत्रों में अतिरिक्त श्रमषक्ति तेजी से बढ रही है । हमारे देश की जनसंख्या में प्रतिशत की दर से व्रद्वि हो रही है । इसमें सर्वाधिक संख्या युवको की है । बङे पैमाने पर गरीबी बेरोजगारी तथा भुखमरी के बोझ को वहन करने के कारण हमारे देश/राज्य का आर्थिक स्वास्थ्य बहुत बिगङ गया है । जनसंख्या बढने से भूमिहीन का प्रतिशत बढ रहा है जिससे ग्राम्य –नगरीय प्रवास को बढावा मिल रहा है ।

5 जनसंख्या व्रद्वि तथा ऊर्जा संकट :–

हमारे देश में जनसंख्या व्रद्वि के कारण न केवल खाघ संकट पैदा हो रहा है बल्कि भोजन पकाने के लिये उधोगों को चलाने के लिये तथा घरेलू कार्यों के प्रकाश के लिये भी ऊर्जा उत्पन्न हो रहा है जिसकी लगातार कमी होती जा रही है । हमारे देश में वर्ष 1990 में 18 करोङ टन खाधान उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है । इतने अनाज को पकाने के लिये लगभग 27 करोड टन जलाऊ लकडी की आवश्यकता होगी । इतनी अधिक जलाऊ लकडी व अन्य इंधन के वाणिज्यिक स्त्रोतों को प्राप्त करने के लिये देश के पर्यावरण को तहस–नहस करना होगा ऊर्जा संकट को दूर करने के लिये मनुष्यों ने परमाणु ऊर्जा को भी अपनाया जिससे नाभिकीय प्रदूशण की भी समस्या उत्पन्न हुई ।

ठस प्रकार निश्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि हमारे देश की समास्या मुख्य रूप से जनधिक्य की समस्या है। जहाँ तक संख्या का सम्बन्ध है जनसंख्या की सर्वाधिक वांछनीय संख्या वह है जिसमें अधिकतम उत्पादन जीवन का उच्चतम स्तर पर्यावरण सन्तुलन राजनैतिक स्थायित्व आर्थिक सुरक्षा तथा सांस्कृतिक मूल्यों को प्राप्त करने के लिये प्रयत्न करने हेतु पर्याप्त स्वतंत्र अवसर मिल सके ।

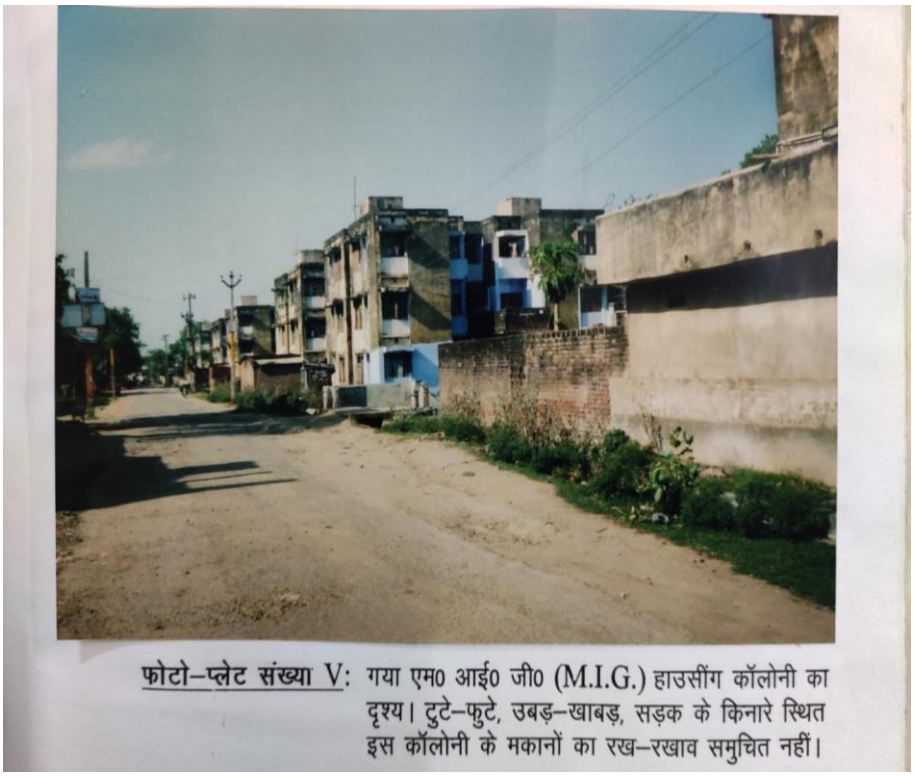

फोटो–प्लेट संख्या V: गया एम0 आई0 जी0 (M.I.G.) हाउसींग कॉलोनी का दृश्य। टुटे–फुटे, उबड़–खाबड़, सड़क के किनारे स्थित इस कॉलोनी के मकानों का रख–रखाव समुचित नहीं।

संदर्भ

1 सिंह सविन्द्र पर्यावरण भूगोल 1991 इलाहाबाद प्रयाग पुस्तक भवन पृ0 सं0 424–25

2 नेगी पी0 एस0 पारिस्थितिकीय विकास एवं पर्यावरण भूगाोल आगरा रस्तोगी पब्लिकेषन्स पृ0 सं0 30

3 सिंह सविन्द्र संदर्भ 4 पृ0 सं0 364–65

4 संदर्भ 5 पृ0 सं0 361

5 सिंह षैलेन्द्र कुमार बिहार में पर्यावरण एवं पारिस्थैतिकी तंत्र पर मानवीय क्रियाकलापों का प्रभाव : पर्यावरण भूगोल में एक विषिश्ट अक्ष्ययन 2009 एक अप्रकाषित षेाध –प्रबन्ध बोधगया मगध विष्वविद्यालय पृ0 सं0 96–97

RRIJM 2015, All Rights Reserved